Ancient Vedic Mantras and Rituals

Guru Nanak Jayanti 2025| गुरु नानक जयंती प्रकाश पर्व का महत्व, इतिहास और पूजा विधि | PDF

भारत की पावन भूमि संतों और गुरुओं की धरती रही है। इन्हीं महान आत्माओं में से एक हैं — **श्री गुरु नानक देव जी**, जो सिख धर्म के प्रथम गुरु और संस्थापक थे। उनका जन्मदिन **गुरु नानक जयंती** या **गुरुपुरब** के रूप में पूरे विश्व में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। यह दिन केवल सिख समुदाय के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा का प्रतीक है।

गुरु नानक जयंती कब मनाई जाती है?

गुरु नानक जयंती हर वर्ष **कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि** को मनाई जाती है।

यह दिन **कार्तिक पूर्णिमा** कहलाता है और हिंदू पंचांग के अनुसार सबसे शुभ तिथियों में से एक है।

साल 2025 में **गुरु नानक जयंती 5 नवंबर (बुधवार)** को मनाई जाएगी।

गुरु नानक देव जी का जीवन परिचय

गुरु नानक देव जी का जन्म **15 अप्रैल 1469** को **राय भोए की तलवंडी (वर्तमान ननकाना साहिब, पाकिस्तान)** में हुआ था। उनके पिता का नाम **मेहता कालू चंद** और माता का नाम **माता त्रिप्ता देवी** था। गुरु नानक देव जी बचपन से ही अत्यंत तेजस्वी, विनम्र और धार्मिक प्रवृत्ति के थे।

उन्होंने मात्र 16 वर्ष की आयु में संसार की असारता को समझ लिया और ईश्वर की भक्ति में लीन हो गए। विवाह के पश्चात भी उन्होंने सांसारिक मोह छोड़कर संसार के कल्याण हेतु भ्रमण प्रारंभ किया। उनकी यात्राएँ **भारत, तिब्बत, अफगानिस्तान, श्रीलंका और अरब देशों** तक फैली थीं।

गुरु नानक देव जी का संदेश
गुरु नानक देव जी का सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा, समानता और ईश्वर प्रेम को समर्पित था। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जात-पात और भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई।
उनके तीन मुख्य उपदेश आज भी सिख धर्म की नींव हैं –

नाम जपना (ईश्वर का स्मरण)
→ हर समय प्रभु का नाम जपना और उसे जीवन में धारण करना।

किरत करना (ईमानदारी से मेहनत करना)
→ सच्चाई और परिश्रम से जीवन यापन करना।

वंड छकना (साझा करना)
→ अपनी कमाई और वस्तुओं को जरूरतमंदों के साथ बाँटना।

गुरु नानक जयंती का धार्मिक महत्व
यह पर्व गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं को स्मरण करने और उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। सिख धर्म के अनुसार, इस दिन प्रभु का नाम जपना, लंगर सेवा, कीर्तन और संगत करना अत्यंत पुण्यदायक माना गया है।

गुरु नानक जयंती केवल जन्मोत्सव नहीं है, बल्कि **"सत्य, प्रेम और सेवा"** की भावना का उत्सव है। यह दिन हमें सिखाता है कि सच्ची पूजा ईश्वर की नहीं, बल्कि मानवता की सेवा में निहित है।

गुरु नानक जयंती कैसे मनाई जाती है

गुरु नानक जयंती पूरे विश्व में सिख समुदाय और अन्य धर्मावलंबियों द्वारा अत्यंत श्रद्धा से मनाई जाती है।

1. अखंड पाठ

इस दिन से दो दिन पहले गुरुद्वारों में **"अखंड पाठ"** आरंभ होता है — यह गुरु ग्रंथ साहिब का निरंतर पाठ होता है जो लगभग 48 घंटे तक चलता है। इससे वातावरण पवित्र और आध्यात्मिक बन जाता है।

2. नगर कीर्तन

गुरु नानक जयंती से एक दिन पूर्व **नगर कीर्तन** निकाला जाता है। इसमें **पांच प्यारों (पंच प्यारे)** के नेतृत्व में कीर्तन यात्रा निकाली जाती है। झांकियों में गुरु नानक देव जी के उपदेशों और जीवन के प्रसंगों को दर्शाया जाता है।

3. गुरुद्वारों में विशेष दीवान

इस दिन गुरुद्वारों में भव्य **दीवान (सभा)** आयोजित की जाती है, जहाँ **कीर्तन, अरदास, कथा और प्रवचन** होते हैं। भक्तजन भक्ति गीतों के माध्यम से गुरु नानक देव जी के उपदेशों को याद करते हैं।

4. लंगर सेवा
गुरु नानक जयंती का सबसे महत्वपूर्ण भाग है — **लंगर सेवा**।
हर गुरुद्वारे में निशुल्क सामूहिक भोजन (लंगर) की व्यवस्था की जाती है। इसमें सभी धर्म, जाति और वर्ग के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। यह **समानता और एकता** का अद्भुत प्रतीक है।

5. दीप सज्जा और भजन-कीर्तन
रात को गुरुद्वारों और घरों में दीपक और मोमबत्तियाँ जलाकर सजावट की जाती है। भजन, आरती और सत्संग के माध्यम से वातावरण भक्तिमय बना रहता है। कई स्थानों पर **शोभा यात्राएँ और प्रकाश पर्व** भी आयोजित किए जाते हैं।

गुरु नानक देव जी की शिक्षाएँ आज के युग में
गुरु नानक देव जी के विचार सदियों बाद भी पूरी तरह प्रासंगिक हैं। आज जब समाज जात-पात, भेदभाव और स्वार्थ से जूझ रहा है, उनका संदेश हमें याद दिलाता है कि **"मानव सेवा ही सच्ची पूजा है।"**

वे हमें सिखाते हैं कि —
- धर्म का सार कर्म और करुणा में है, न कि दिखावे में।
- स्त्री और पुरुष समान हैं, दोनों में ईश्वर का ही अंश है।
- प्रेम, सहनशीलता और विनम्रता जीवन के सर्वोत्तम गुण हैं।

गुरु नानक देव जी की यात्राएँ (उदासियाँ)
गुरु नानक देव जी ने **चार प्रमुख यात्राएँ (उदासियाँ)** कीं — जिनका उद्देश्य था सत्य का प्रचार और समाज में समानता का संदेश देना।

- **पूर्व उदासी** – बंगाल, असम और नेपाल तक।
- **दक्षिण उदासी** – श्रीलंका और दक्षिण भारत तक।
- **उत्तर उदासी** – तिब्बत और हिमालय क्षेत्र तक।
- **पश्चिम उदासी** – मक्का, मदीना, अफगानिस्तान और ईरान तक।
- इन यात्राओं में उन्होंने सभी धर्मों के लोगों से संवाद किया और **"एक ओंकार"** का संदेश फैलाया।

गुरु नानक देव जी और एकेश्वरवाद
गुरु नानक देव जी ने सिखाया कि **ईश्वर एक है, उसका कोई रूप नहीं**।

वह हर जगह है — पत्थर, पेड़, जीव-जंतु और मनुष्य में भी।
उनका सबसे प्रसिद्ध मंत्र **"एक ओंकार सतनाम"** इसी विचार का प्रतीक है,

जिसका अर्थ है — "एक ही सत्य ईश्वर है, और वही सबका नाम है।"
गुरु नानक देव जी का निधन और विरासत
गुरु नानक देव जी ने जीवन के अंतिम वर्ष **करतारपुर (अब पाकिस्तान)** में बिताए। वहीं पर उन्होंने **"संगत" और "पंगत"** की परंपरा स्थापित की — जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर प्रार्थना और भोजन करते हैं।

साल **1539 ई. में, कार्तिक मास की अमावस्या** को उन्होंने परमधाम प्राप्त किया। उनकी विरासत आज भी **सिख धर्म के दस गुरुओं**, गुरु ग्रंथ साहिब और **गुरुद्वारों** के रूप में जीवित है।

गुरु नानक जयंती का सामाजिक संदेश

गुरु नानक जयंती केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है,
यह **मानवता, समानता और सत्य के उत्सव** का प्रतीक है।
यह दिन हमें याद दिलाता है कि —

"धर्म केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि मनुष्यता के व्यवहार में बसता है।"

इस अवसर पर समाज सेवा, दान, शिक्षा और जरूरतमंदों की सहायता को
सबसे बड़ा धर्म माना जाता है।

गुरु नानक जयंती से मिलने वाले प्रेरणास्रोत लाभ

- **आध्यात्मिक जागरण** – ईश्वर में विश्वास और भक्ति की भावना प्रबल होती है।
- **समानता का संदेश** – सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से देखने की प्रेरणा मिलती है।
- **सेवा भाव** – दूसरों की सहायता और समाज कल्याण के प्रति समर्पण।
- **शांति और एकता** – सामूहिक भक्ति और कीर्तन से समाज में सौहार्द बढ़ता है।
- **नकारात्मकता से मुक्ति** – भजन, कीर्तन और सत्संग से मन शुद्ध होता है।

निष्कर्ष

गुरु नानक जयंती केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक **आध्यात्मिक यात्रा** है — जो हमें सत्य, प्रेम, समानता और सेवा का मार्ग दिखाती है। गुरु नानक देव जी के उपदेश आज भी मानवता को दिशा दे रहे हैं।
उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्चा धर्म वह है जो **सबके कल्याण में हो।** गुरु नानक जयंती मनाने का सार यही है कि हम भी अपने जीवन में उनकी शिक्षाओं को अपनाएँ और मानवता की सेवा करें।

“नाम जपो, किरत करो, वंड छको” — यही गुरु नानक देव जी का संदेश है,
और यही मानवता का सच्चा धर्म।

Related Article

गुरु नानक द्वारा दिए गये महत्वपूर्ण सन्देश

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: